कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 12, (मई, 2024)
पृष्ठ संख्या 37–39

सरसों मे लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

अरविन्द कुमार, मृत्युंजय सिंह, लवकेश सावले, रंजीत चौहान एवं सोमनाथ जादव
इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज सेज यूनिवर्सिटी
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

Email Id: – mrityunjay.singh@sageuniversity.in

अल्टरनेरिया पर्ण चित्ती रोग

रोगजनक : *अल्टरनेरिया ब्रेसिकी,*

अल्टरनेरिया ब्रेसिसिकोला

लक्षणः यह रोग पत्तियों, तनो और फलियों पर भूरे काले धब्बों के रूप में दिखाई देता है। रोग की उग्र अवस्था मेंपूरी पत्तियों को झुलसा देने की क्षमता के कारण इस रोग को अल्टरनेरिया झुलसा रोग भी कहते हैं। इस रोग के प्रमुख लक्षण सबसे पहले पौधों की पत्तियों पर प्रकट होने भाुरू होते हैं जो भूरे काले रंग के छोटे धब्बों के रूप में विकसित होते हैं जो भीध्रता से बढ़कर एक लक्ष्य बोर्ड के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं । ये धब्बे सर्वप्रथम पौधों की निचली पत्तियों पर उत्पन्न होते हैं रोग की उग्र अवस्था में लक्ष्य बोर्ड की तरह प्रतीत होने वाले ये धब्बे आपस में मिलकर पत्तियों के पुरे भाग पर फैले जाते हैं जिससे पत्तियां झुलसी हुई दिखाई देने लगती हैं। इस रोग के पत्तियों पर फैल जाने की वजह से फलियों की संख्या कम हो जाती है तथा उनमें बीजों की संख्या एवं भार में भी काफी कमी आती हैं, जिससे उपज में काफी हानि होती है। और साथ ही साथ तेल की मात्रा बीजों में काफी कम हो जाती है।

अल्टरनेरिया पर्ण चित्ती या अंगमारी रोग का प्रबंधन

- फसल की बुवाई करने से पूर्व फसल के खरपतवारों को खेत से निकालकर नष्ट कर देना चाहिये। ऐसा करने से खेत में रोगजनकों की मात्रा काफी कम हो जाती है जिससे फसलों कीप्रारंभिक अवस्था में प्राथमिक संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

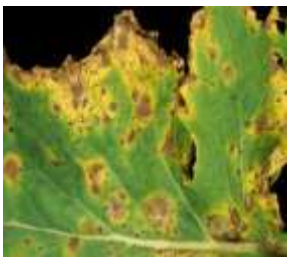

- डाइथेन एम 45, डाईफोलेटान, बाईकोर या डेकोनिल की 2.5 ग्राम प्रति लीटरतथाप्रोपिकोनाजोल और हेक्साकोनाजोल की 1मिलीलीटर/ प्रतिलीटर की मात्राा देने से काफी लाभ प्राप्त होता है। रोग के लक्षण

दिखाई देते ही कवकना ाी का प्रथम छिड़काव तथा 15 दिनों के अन्तर पर दो अन्य छिड़काव करने से रोग नियंत्रण में काफी लाभ प्राप्त होता है।

चूर्णिल आसिता रोग

रोगजनक : *इरीसाइफी क्रुसीफेरम*

लक्षण :फसल की प्रारम्भिक अवस्था में इस रोग का संकमण होने से उपज में काफी हानि होती है। रोग के लक्षण पौधे के वायव भागों पर मटमैले सफेद पैच के रूप में पत्तियों, तनों एवं फलियों पर दिखाई देते हैं। तापक्रम बढने पर ये मटमैले सफेद पैच आपस में मिलकर पत्तियों, तनों एवं फलियों के पूरे भाग को ढक लेते हैं। रोग के उग्र प्रभाव में फलियाँ कवक के सफेद कवक जाल एवं कोनिडियम से ढक जाती है जिससे बीज की मात्रा एवं भार में काफी कमी हो जाती है।

रोग प्रबंधन

- राई तथा सरसों की बुवाई समय से करने से (अक्टूबर के आखिरी सप्ताह) रोग की संभावना काफी कम हो जाती है क्योंकि फसल पहले ही परिपक्व हो जाती है जिससे रोग का प्रभाव कम पड़ता है।
- चूर्णित आसिता के लिये रसायनो का उपयोग काफी हद तक प्रभावी पाया गया है। कैराथिन या कैलेक्सिन 1 ग्राम प्रति लीटर एवं सल्फेक्स 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से रोग के लक्षण दिखाई देने के तुरन्त बाद तथा 2 छिड़काव 10 दिनों के अन्तर पर करने से रोग का नियंत्रण हो जाता है।

किटट् रोग

रोगजनक : *एल्बुगो कैण्डिडा*

लक्षण : इसरोग का रोगजनक पौधों

की जड़ों के अतिरिक्त सभी वायव भागों पर संक्रमण कर रोग के लक्षण उत्पन्न करता है। इस रोग के रोगजनक राई व सरसो में दो प्रकार से संक्रमण करते हैं जिन्हे स्थानीय व सर्वागीं संक्रमण कहते हैं। स्थानीय सक्रमण में पत्तियों, तनों एवम पुष्प वन्तों पर चमकीले सफेद या क्रीम पीत रंग के उठे हुये फफोलेबनते हैं। ये फफोले पहले तो अलग अलग बनते हैं पर भीध्र ही ये फफोले आपस में मिलकर बड़े फफोलों में परिवर्तित हो जाते है। प्रारम्भ में ये भवेत फफोले पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देते हैं पर रोग की उग्र अवस्था में ऊपरी पत्तियों पर भी दिखाई

देने लगते हैं। पौधों के तरूण तनों एवम पुश्पक्रम पर इस रोग को उत्पन्न करने वाले रोग जनक का सर्वांगी सक्रमण होता है जिसके कारण संक्रमित पुश्प भाग में बीज नहीं बन पाते हैं।

रोग का प्रबंधन

- स्वस्थ बीजों का प्रयोग करनाचाहिये।
- राई व सरसों की अगेती बुवाई करने पर रोग का प्रभाव फसल पर कम पड़ता है।
- रिडोमिल (मेटालैक्सिल) कवकनाशी का प्रयोग 1 ग्राम प्रति लीटर की दर से और 2 ग्राम प्रतिलीटर के दर से डाइथेन एम 45 (मेकोजेब) या कैप्टाफाल का प्रयोग पत्तियों पर भवेत फफोले दिखाई देते ही कर देना चाहिये। दो छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करने से रोग का प्रभाव काफी कम हो जाता है।

मृदरोमिल आसिता रोग

रोगजनक : ***पेरोनोस्पोरा ब्रेसिकी***

लक्षण : राई एवं सरसों में मृदरोमिल आसिता रोग एक प्रमुख रोग है जो सफेद या थोड़े रंगीन आसिता वृद्वि भांति पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देती हैं। रोग के प्रथम लक्षण काटीलिडनरी तथा प्राथमिक पत्तियों पर दिखाई देते हैं। प्राथमिक अवस्था में रोग के लक्षण छोटे, क्रीमी हल्के भूरे धब्बों के रूप में पतियों के निचले सिरों पर दिखाई देते हैं जो बाद में थोड़े बड़े हो जाते हैं। धब्बों के ऊपर की सतह पीले रंग की हो जाती है तथा विभिन्न प्रकार के पीले जलसिक्त धब्बे बन जाते हैं। पत्तियों के पीले धब्बों की निचली सतह पर मृदुरोमिल आसिता वृद्वि दिखाई देती है जो रोगजनक आभासी कवक के कोनिडियम और कोनिडियोफोर्स होते हैं।

रोग का प्रबंधन

- दो तीन वर्शो का फसल चक्र को अपनाने से भमि से पड़े ऊस्पोर्स परपोशी फसल न मिलने के कारण मर जाते हैं जिससे रोगजनकोंकी संख्या काफी कम हो जाती है।
- स्वस्थ बीजों को उपयोग करना चाहिये तथा बीज का उपचार एप्रोन एस डी–70 1 ग्राम सक्रिय अवयव प्रति किलो बीज की दर से करना चाहिये।
- कवकनाशी रसायनोंजैसे इन्डोफिल एम – 45 (मैंकोजेब) या रिडोमिल (रिडोमिल) की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर की दर से लक्षण दिखने के तुरन्त बाद तथा पुनः दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करने से रोग का नियंत्रण हो जाता है। डाइफोलेटान एवं थियोविट की 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करने से रोग का नियंत्रण किया जा सकता है।